बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं
कुदरती जादू
या लंबा, लंबा सफर?

जीन आइचिसन



यह व्याख्यान भाषा के ज्ञान के निर्माण के बारे में है, और इस बारे में है कि क्या भाषा सीखना एक क़ुदरती जादू है या एक लंबा परिश्रम? ख़ैर, यह थोड़ा-थोड़ा दोनों है। ज़ाहिर है कि कुछ तो क़ुदरती यानी जन्मजात है अन्यथा गोल्डफिश भी बोलना सीख जाती। मगर सीखने की भी भूमिका है; बरसों बाद ही बच्चे दक्ष हो पाते हैं। मैं मुख्य रूप से प्रथम भाषा सीखने के बारे में बात कर रही हूं मगर थोड़ी बात दूसरी भाषा सीखने के बारे में भी।

सबसे पहले, कि भाषा में क़ुदरती रूप से निर्देशित सीखना शामिल होता है। इस तरह के सीखने में जंतु सहजवृत्ति से जानता है कि उसे किस बात पर ध्यान देना है, मगर बारीक़ियां सीखने में समय लगाना होता है। पक्षी और मधुमक्खियां और फूल इसके उम्दा उदाहरण हैं।

फूल एक-दूसरे से काफ़ी अलग होते हैं और मधुमक्खियां फूलों के बारे में जानते हुए पैदा नहीं होती, उन्हें सीखना होता है। उन्हें सहजवृत्ति से पता होता है कि उन्हें गंध, रंग और आकृति पर इसी क्रम में ध्यान देना है। इसलिए वे किसी बस स्टॉप या पोस्ट बॉक्स की ओर उड़ना सीखने की बजाय गुलाब तक उड़ना सीखती हैं जबकि कभी-कभी बस स्टॉप और पोस्ट बॉक्स भी चटख रंगों के होते हैं। इसी प्रकार से मानव शिशु भी क़ुदरती तौर पर लोगों के मुंह से निकलती ध्वनियों पर ध्यान देते हैं और उन्हें सहजवृत्ति से इनका अर्थ निकालना आता है। मगर इसमें लंबा समय लगता है।

पूर्व-भाषा - हम रोने के साथ शुरू करते हैं। शुरू में बच्चे सिर्फ़ रोते हैं। ऐसा कहते हैं कि बेंजामिन फ्रेंकलिन ने (बच्चों के बारे में) कहा था, "एक सिरे पर ज़ोरदार आवाज़ और दूसरे पर ज़िम्मेदारी का कोई एहसास नहीं"। सारी भाषाओं में एक ही तरह का रोना देखा जा सकता है। कोई भारतीय मां और कोई अंग्रेज़ी मां ख़ुद अपने और एक-दूसरे के बच्चे का रोना पहचान जाएंगी। इसके बाद बच्चे गूं-गूं करते हैं, यह क़रीब 6 सप्ताह में आता है। और इसके बाद क़रीब छह माह पर वे बेबल करते हैं, मम्मा जैसी आवाज़ें दोहराते रहते हैं। माता-पिता कई बार मान लेते हैं कि उनके बच्चे उन्हें पुकार रहे हैं, हालांकि अपने होंठों के साथ प्रयोग करते हुए यही आवाज़ें निकालना उनके लिए सबसे आसान होता है। अब हम उतार-चढ़ाव पर आते हैं, जो क़रीब 8 माह में आता है। बच्चों की आवाज़ ऐसी लगती है जैसे वे बातें कर रहे हैं, मगर वे तो सिर्फ़ सुनी हुई भाषा की लय की नक़ल कर रहे हैं।

हमें दो शुरुआती भाषाएं मिलती हैं। एकल-शब्द-उद्गार क़रीब 12 माह में आता है। जैसे अंग्रेज़ी में बच्चे अक्सर 'du' कहते हैं जिसका मतलब होता है juice। दो शब्दों के उद्गार क़रीब 18 माह में आते हैं - जैसे more du मतलब more juice। where daddy जैसे सवाल और no bed जैसे नकारात्मक वाक्य क़रीब दो वर्ष में आते हैं।

अब हम आगे के मुक़ाम पर पहुंचते हैं। खण्ड चार के तहत हम देखते हैं कि लंबे वाक्य क़रीब 3 वर्ष की उम्र में आते हैं मगर थोड़ा सावधानी से छानबीन करने पर पता चलता है कि इस समय तक बच्चे कहीं अधिक जानते हैं। 10 वर्ष की उम्र तक सारी प्रमुख संरचनाएं तैयार हो जाती हैं, काफ़ी जटिल संरचनाएं भी। मगर सीखने का एक पक्ष आजीवन जारी रहता है - शब्द सीखना, शब्द भंडार का अर्जन।

तो अब हम बात करते हैंः शब्द सामर्थ्य की। बच्चे बहुत छोटी उम्र से ही कई शब्द समझते हैं; मेरा भतीजा, जब उसके माता-पिता कहते कि 'मुझे बाघ दिखाओ' तो वह अपने पालने के ऊपर लगे चित्र में काफ़ी विश्वसनीय ढंग से बाघ की ओर इशारा कर सकता था मगर उसके लिए यह एक खेल भर था। जब उसके माता-पिता बाघ शब्द बोलते तो उसे पता था कि पट्टेवाले जानवर की ओर इशारा करना है। उसे शायद यह पता नहीं था कि यह उस जानवर का नाम है जिसकी ओर वह इशारा कर रहा है। किसी अवस्था में बच्चे नामों की ताक़त समझ जाते हैं, वे नामकरण समझ नामक कोई चीज़ हासिल कर लेते हैं यानी यह समझ कि चीज़ों के नाम होते हैं, वे इस मक़ाम पर दूसरे साल में, आम तौर पर 15 से 18 माह की उम्र में पहुंचते हैं। इसके बाद वे हर चीज़ को नाम देते हैं। अब ज़ाहिर है हम घुटने चलते बच्चों से इसकी बात नहीं कर सकते, मगर बधिर बच्चों के अनुभव से इस मुक़ाम के बारे में काफ़ी कुछ जानते हैं जो नामकरण समझ के पड़ाव पर देर से पहुंचते हैं।

हाल का एक मामला एक बधिर मेक्सिकन अल डेफांसो का है, जिसने नामकरण समझ खोज ली थी जबकि उसे बताया नहीं गया था।। उसने इसकी खोज चरणों में की थी, सबसे पहले संख्याएं, फिर संज्ञाएं और फिर क्रियाएं। अब सब लोग सहमत हैं कि क़रीब 18 माह की उम्र में शब्द उफान आता है, जब लगता है कि बच्चे शब्द सोखते जाते हैं। दो वर्ष की उम्र तक आम तौर पर बच्चे कई सैकड़ा शब्द जानते हैं, और बड़े लोगों के समान बोलते हैं जबकि वे अभी बड़े नहीं हुए हैं, और तीन वर्ष की उम्र तक हज़ार से ज़्यादा शब्द जानते हैं। बच्चों के पास सक्रिय शब्द भंडार क़रीब 3000 शब्दों का होता है, अक्रिय शब्द भंडार (जिन्हें वे समझते हैं) संभवतः इससे काफ़ी ज़्यादा, अनुमानित 10000 शब्दों का, हो सकता है। शब्द खोज क़रीब 13 वर्ष की उम्र में होती है। मैंने एक शोधकर्ता एन कोपेल के साथ 11-14 वर्ष के ब्रिटिश बच्चों के शब्द भंडार का एक सर्वेक्षण किया था। हमने 400 बच्चों की जांच की थी, दो स्कूलों के 200-200 बच्चे थे और हमने देखा कि 11 और 12 वर्षीय बच्चे एक समूह में रहे और 13-14 वर्षीय बच्चे दूसरे समूह में। अधिकांश ब्रिटिश बच्चों ने 13 वर्ष की उम्र तक 20,000 शब्द हासिल कर लिए थे। यह संख्या याद रखें 20,000। 20,000 शब्द वह क्रान्तिक मात्रा है जो धाराप्रवाह अंग्रेज़ी बोलने के लिए चाहिए। मैंने पाया कि विदेशी छात्र, जिनमें से कुछ का परीक्षण मैंने किया था (कुछ भारतीय भी थे), जो इस मात्रा तक पहुंच गए थे वे किसी भी विषय के बारे में दक्षतापूर्वक बात कर सकते थे। और 20,000 से कम शब्दवालों को जूझना पड़ता था। औसत ब्रिटिश भाषी वयस्क 50,000 शब्द जानता है। तुलना के लिए देखें कि कॉन्साइस ऑक्सफर्ड डिक्शनरी का दावा है कि उसमें 75,000 शब्द हैं। तो एक औसत ब्रिटिश वयस्क दो-तिहाई कॉन्साइस ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी जानता है। मगर कोई इससे पीछे भी है तो चिंता नहीं क्योंकि शब्द सीखना आजीवन चलता है।

अब मैं - भाषा और बुद्धिमत्ता का पृथक्करण। भाषा, यानी बोलने की क्षमता, आश्चर्यजनक रूप से आम बुद्धिमत्ता से अलग है। आम तौर पर भाषा और बुद्धि साथ-साथ आगे बढ़ते हैं, मगर ऐसे कई विचित्र मगर मेधावी इन्सान हैं जिनमें भाषा और बुद्धि अलग-अलग होते हैं। पहली है एक महिला लौरा, कभी-कभी मार्था। लौरा व्याकरण की दृष्टि से नफ़ीस वाक्यों का उपयोग करती थी मगर अक्सर इनका कुछ मतलब नहीं होता था, जैसे - "पिछले वर्ष मैं 16 वर्ष की थी, और अब मैं इस साल 19 वर्ष की हूं"; और यह मेरा प्रिय वाक्य है - "वह सोच रही थी कि यह कोई आम स्कूल नहीं है, यह तो बस अच्छा सा पुराने क़िस्म का था, कोई बसें नहीं और मुझे यह बिलकुल अच्छा नहीं लगता कि वह मेरे मुंह में पेपर टॉवेल डाले।" लौरा सीखे हुए वाक्यों के टुकड़े नहीं दोहरा रही थी, क्योंकि वह व्याकरण की ग़लतियां भी करती थी। जैसे, "These are two glasses I have taken, it was given by a friend, I don't know how I catched it." एक और उदाहरण क्रिस्टोफर का है जिसकी भाषा व बुद्धि अलग-अलग हो गए थे। वह गंभीर मानसिक अपंगता से पीड़ित है। वह अपनी देखभाल नहीं कर पाता, मगर भाषा सीखने में खासा हुनर रख़ता है। जब वह 29 वर्ष का था, उसने स्वीडिश से यह तर्जुमा किया था - "Mia is sitting crouched in the kitchen sofa, with her knees bent and her feet tied up in lovely night shirt, the cat spins in her knee." यह एकदम सही अनुवाद था। "Mia is crouched up on the kitchen sofa, with her knees drawn out and her feet tucked into her stripy nightie, the cat is purring into her knee." भी वही अनुवाद है जो क्रिस्टोफर का था मगर क्रिस्टोफर ने purr शब्द को स्वीडिश के शब्द spin शब्द से भ्रमित कर दिया था जो purr जैसा ही लगता है। और एक और क़िस्म का बच्चा है, जो बच्चे विलियम सिंड्रोम से पीड़ित हैं वे विशेष कार्यों से नहीं निपट पाते, जैसे, वे एक सायकल के पुर्ज़ों को जोड़कर पूरी सायकल नहीं बना पाते। मगर उनकी भाषा काफ़ी नफ़ीस और विस्तृत होती है। उदाहरण के लिए 17 वर्ष के एक बच्चे द्वारा दिया गया ब्रेन स्कैन का विवरण देखिए - "एक बड़ी चुंबकीय मशीन होती है, उसने भेजे के अंदर का चित्र खींचा। आप बात कर सकते हैं मगर अपना सिर नहीं घुमा सकते क्योंकि उससे पूरी चीज़ बरबाद हो जाएगी और उन्हें फिर से शुरू करना पड़ेगा। यह सब होने के बाद, वे आपको आपका भेजा एक कंप्यूटर पर दिखाते हैं और वे देखते हैं कि वह कितना बड़ा है।"

अब मैं उन तथ्यों की चर्चा करना चाहती हूं कि इन्सान जैविक रूप से, शारीरिक व मानसिक दोनों तरह से, भाषा के लिए ढले हैं। शारीरिक स्तर पर जीभ मांसल और गतिशील है। वह कुत्ते जैसे अन्य जानवरों की तरह सुस्त नहीं है। इन्सान

की जीभ उपयोगी है; यह न सिर्फ़ मुंह के हर हिस्से से भोजन को बटोर सकती है, बल्कि विभिन्न क़िस्म की आवाज़ें निकाल सकती है। इन्सान के दांत एक बराबर होते हैं, और हालांकि शायद यह भोजन खाने के लिहाज़ से बहुत बढ़िया न हो, मगर इसकी बदौलत मुंह में एक उपयोगी पर्दा बनाने में मदद मिलती है जिसके द्वारा [t, s, z, l] जैसी आवाज़ें उच्चारित की जा सकती हैं। बोलते समय फेफड़े सांस को जल्दी-जल्दी खींचने और धीरे-धीरे छोड़ने में मददगार होते हैं।

यह अनुकूलन असाधारण है क्योंकि अधिकांश मामलों में श्वसन को नियंत्रित नहीं किया जा सकता। मगर इन्सान बग़ैर परेशानी घण्टों बोल सकते हैं; उन्हें सांस लेने में दिक़्क़त की नहीं, गला दुखने की संभावना ज़्यादा है। हमारे स्वर रज्जु गले में झिल्लियों की पतली-पतली पट्टियां हैं, जो मूलतः (और आज भी) फेफड़ों को बंद करके पसलियों के पिंजर को सख़्त बनाने में उपयोगी हैं जो भारी बोझ उठाने या पेड़ों पर झूलने जैसे मेहनत के काम में ज़रूरी होता है।

किसी चिंपैंज़ी के सिर और इन्सान के सिर में अंतर पर ग़ौर कीजिए। इन्सान नाक की गुहा को बंद कर सकते हैं और पहचानने योग्य आवाज़ें पैदा कर सकते हैं, ख़ास तौर से तीन एंकर स्वर [i, u, a]। और जब एक बार हम ये तीन स्वर बोल पाएं, तो यह भाषा की हमारी उड़ान की कुंजियों में से एक थी। अब मैं 50-75 हज़ार साल पहले की बात कर रही हूं। अब, हमारे मानव मस्तिष्क भाषा के लिए विशेषीकृत हो गए हैं। हमारे दिमाग चिम्पैंज़ी से बड़े हैं, ख़ास तौर से अगला हिस्सा, मगर वास्तव में साइज़ की बजाय गुणवत्ता का ज़्यादा महत्त्व है। अधिकांश इन्सानों में बाएं गोलार्ध का उपयोग भाषा के लिए होता है। अधिकांश इन्सान दाएं हाथ से काम करने में दक्ष होते हैं और इनमें से 90 प्रतिशत में भाषा बाएं गोलार्ध या भेजे के बाएं हिस्से में होती है। वामहस्त लोग, जो अपेक्षाकृत बिरले होते हैं, में से भी अधिकांश में भाषा मुख्यतः बाएं गोलार्ध में होती है। ये आंकड़े तंत्रिकाविज्ञान की एक किताब से हैं जो बताते हैं कि 90 प्रतिशत दक्षिणहस्त लोगों में और अधिकांश वामहस्त लोगों में भी भाषा बाएं गोलार्ध में होती है। एक जीववैज्ञानिक एरिक लेनबर्ग ने 1967 में एक महत्त्वपूर्ण किताब लिखी थी जिसका नाम था *दी बायोलॉजिकल बेसिस ऑफ लैंग्वेज*। उन्होंने बताया था कि भाषा एक परिपक्वता नियंत्रित व्यवहार है, यानी चलना सीखने या यौन व्यवहार के समान एक व्यवहार जिसमें व्यवहार के विभिन्न पहलू व्यक्ति के जीवन के अलग-अलग मुक़ामों पर क़ुदरती रूप से विकसित होते हैं, बशर्ते कि आसपास के परिवेश में पर्याप्त उद्दीपन मौजूद हो। उन्होंने इस तरह के व्यवहार को पहचानने के लिए कुछ प्रमुख बिंदु बताए थेः

1. परिपक्वता नियंत्रित व्यवहार उसकी ज़रूरत होने से पहले उभरता है।
2. यह किसी बाह्य घटना से प्रेरित होकर शुरू नहीं होता। जब बच्चों को बोलना होता है तब माता-पिता उन्हें अचानक सिर के बल नहीं पटकते।
3. यह किसी सचेत निर्णय का परिणाम नहीं होता।
4. प्रत्यक्ष शिक्षण का असर अपेक्षाकृत कम होता है। और
5. पड़ावों का एक नियमित क्रम होता है।

1967 की अपनी किताब में लेनेबर्ग ने दलील दी थी कि एक तयशुदा निर्णायक अवधि होती है जिसके दौरान भाषा अर्जन संभव है। उन्होंने दावा किया था कि यह (अवधि) क़रीब दो वर्ष की उम्र में शुरू होती है और किशोरावस्था में समाप्त हो जाती है। इसके बाद, उनके मुताबिक़, "भाषा अर्जन नामुमक़िन है"। मगर इस कठोर निर्णायक अवधि के बारे में वे ग़लत थे। वे दो लिहाज़ से गलत थे। पहला कि बच्चे दो वर्ष की उम्र से पहले बड़ी मात्रा में भाषा अर्जित करते हैं। दो वर्ष से कम उम्र में बाएं गोलार्ध में गंभीर क्षति होने पर भाषा सम्बंधी स्थायी क्षति हो सकती है। दूसरा, पार्श्वीकरण (यानी भाषा का विशेषीकरण बाएं गोलार्ध में होना) बहुत कम उम्र के शिशुओं में देखा गया है। अर्थात् यदि उनके सामने भाषा की ध्वनियां बजाई जाएं, तो वे बाएं गोलार्ध से ध्यान देते हैं। यह बात काफ़ी विस्तृत प्रयोगों से पता चली है। और यह

भी काफ़ी महत्तपूर्ण है कि नवजात शिशु भी खुद अपनी भाषा पर ज़्यादा ध्यान देते हैं, जिससे पता चलता है कि वे कोख में ही इसकी लय के प्रति अनुकूलित हो चुके होते हैं। और लेनेबर्ग की सोच के विपरीत, किशोरावस्था किसी बिंदु पर यकायक शुरू नहीं होती। भाषा अर्जन 13 वर्ष की उम्र के बाद भी चलता रह सकता है। अधिक उम्र के कुछ लोग भी भाषा सीखने में बढ़िया होते हैं। एक और महत्त्वपूर्ण बात है कि शब्द भंडार का निर्माण तो ताज़िन्दगी चलता रहता है। लोग अपना शब्द भंडार (यदि संभव हुआ हो तो) 100 वर्ष की उम्र तक बढ़ाते रह सकते हैं। और यह भी काफ़ी महत्त्वपूर्ण है कि शब्द भंडार का निर्माण क़रीब 13 वर्ष की उम्र में शिखर पर होता है। तो शोधकर्ता आजकल क्रान्तिक अवधि की बजाय संवेदी अवधि की बात करते हैं, वह समय जिसमें बच्चों का संपर्क भाषा से कराया जाना चाहिए, मगर यह अवधि लेनेबर्ग ने जो सोचा था उससे काफ़ी पहले शुरू हो जाती है और देर तक जारी रहती है। तो मूलतः लोग मानते हैं कि अवसरों की खिड़की ज़्यादा लंबे समय तक खुली रहती है और अपेक्षाकृत धीरे-धीरे बंद होती है। और, उदाहरण के लिए जो परिवार कनाडा प्रवास कर गए हैं, उन्होंने देखा है कि उनके बच्चे वो फ्रांसिसी सीख लेते हैं जो फ्रांसिसी कनाडावासी बोलते हैं। प्रवास के समय बच्चे जितने छोटे होते हैं, उतनी ही आसानी से वे फ्रांसिसी सीखते हैं। जैसा कि हम आज जानते हैं, यह संवेदी अवधि बदलती संवेदनाओं का दौर होता है। बहुत छोटे बच्चे अपनी भाषा की ध्वनि संरचना सीखने में बहुत तेज़ होते हैं। बड़े बच्चे व्याकरण की संरचना पर ध्यान देते हैं। किशोर बच्चे शब्द भंडार पर ध्यान देते हैं। बड़े बच्चे वास्तव में भाषा अर्जित करने के लिए तैयार नहीं होते। इसमें कोई संदेह नहीं कि जो लोग बच्चों की देखभाल करते हैं वे इसमें सहायक या बाधक हो सकते हैं। एक समय था जब बच्चों से बोलने की बोली के लिए मदरीज़ शब्द का प्रयोग होता था। मगर अब हम इस शब्द का उपयोग ज़्यादा नहीं करते क्योंकि सिर्फ़ मां ही बच्चों की देखभाल नहीं करती। पिता, रिश्तेदार और दोस्त भी करते हैं। तो आजकल प्रचलित शब्द देखभालकर्ता है, यानी जो भी देखभाल करे। और हम देखभालकर्ताओं और बाल-संबोधित बोली (child directed speech - CDS) की बात करते हैं। अब यह पता चला है कि लोग जो बातें प्रथम भाषा के देखभालकर्ताओं और सीडीएस के बारे में कहते हैं वे काफ़ी हद तक द्वितीय भाषा सीखनेवालों पर भी लागू होती हैं। अब, सबसे पहले तो सीधे बच्चे से बात करना आवश्यक है। इसमें कुछ मतलब नहीं है कि बच्चे को टीवी के सामने पटक दें और उम्मीद करें वह अंग्रेज़ी सीख जाएगा, वह नहीं सीखेगा। विन्सेन्ट नाम के बच्चे का एक बहुत दिलचस्प मामला हुआ था, जिसके माता-पिता बधिर थे। वे चाहते थे कि विन्सेन्ट न सिर्फ़ उनकी भाषा - संकेत भाषा - सीखे बल्कि अंग्रेज़ी भी सीखे। तो वे उसे टीवी के सामने बैठा दिया करते थे, मगर विन्सेन्ट ने कुछ अंग्रेज़ी नहीं सीखी। तो, कुल मिलाकर, जी हां, आपको बच्चे से बातचीत करनी चाहिए, मगर सही ढंग से। सबसे पहले तो बच्चों (या किसी भी सीखनेवाले) को आलोचना की शैली में, खुले आम या दबे-छुपे, टोकना नहीं चाहिए। अर्थात् आप यह कभी न कहें, "नहीं, यह ग़लत है।" इस ढंग का भूल सुधार बच्चे को अवरुद्ध कर सकता है, ख़ास तौर से यदि देखभालकर्ता आलोचना का स्वर अख़्तियार कर ले। वास्तव में जितना कहा जाता है, बच्चे उससे अधिक देखते हैं। और वे यह समझ जाते हैं कि उनका तिरस्कार किया जा रहा है। यह बात द्वितीय भाषा सीख रहे बड़े बच्चों के लिए भी सही है। तो भूल सुधार, ख़ास तौर से यदि आलोचना की शैली में किया जाए, तो बाधक बन सकता है। फिर बच्चे अक्सर इस बात पर ध्यान नहीं देते कि किस चीज़ को सुधारा जा रहा है। वे तो बस इतना जानते हैं कि उन्हें कोई पसंद नहीं करता या कोई उनकी तारीफ़ नहीं करता और हो सकता है कि वे इसे देखे नहीं या इसकी परवाह न करें। इसके अलावा, माता-पिता जिन चीज़ों में सुधार करते हैं उसमें एकरूपता नहीं रहती। और अक्सर वे भाषा की ग़लतियों की बजाय तथ्य को सुधारने की कोशिश करते हैं।

जैसे जब बच्चे ने कहा कि "teddy sock on" (जब टेडी ने ज़ुराबें पहनी हुई थीं) तो हो सकता है कि उसके पालक कहें "Good! That's right. Teddy's got a sock on"। मगर यदि बच्चे ने व्याकरण के लिहाज़ से सही कहा कि "Teddy's got his sock on" जबकि टेडी ने ज़ुराबें नहीं पहनी हुई हैं, तब शायद पालक कहेंगे "No, you are wrong. Teddy is not wearing a sock"। संक्षेप में, जैसा कि रॉजर ब्राउन ने कभी कहा था, "यदि भूल सुधार उसी ढंग से काम

भारतीय बच्चों द्वारा अंग्रेज़ी सीखने के बारे में प्रभु की एक महत्त्वपूर्ण किताब है, और रमाकांत अग्निहोत्री ने भी काफ़ी महत्त्वपूर्ण काम किया है।

करता हो जैसा पालक सोचते हैं, तो उम्मीद की जानी चाहिए कि बच्चे सत्य को व्याकरण-विरुद्ध बोलते बड़े होंगे।"

दरअसल, मामला उल्टा लगता है। अब कई लोगों ने हाल में भूल सुधार पर अनुसंधान किया है और दर्शाया है कि यह कभी-कभी कारगर होता है, बशर्ते कि बच्चा उस समय भाषा के उस पहलू पर काम कर रहा हो और यदि यह दोस्ताना अंदाज़ में किया जाए। किसी भी समय बच्चे भाषा के किसी पहलू पर चुनिंदा ढंग से ध्यान देते हैं और यही बात द्वितीय भाषा सीखनेवालों पर भी लागू होती है। जैसे एलेक्स के उदाहरण को देखिएः

किसी समय एलेक्स भूतकाल के प्रति ख़ास तौर से सजग था। उसने कहा, "The crocodile bitted the giraffe's feet"। पिता ने कहा, 'He bit his feet" और एलेक्स ने कहा, "Yes, and he bite me too." इससे पता चलता है कि बच्चे ने भूतकाल पर ध्यान दिया था। मगर हम इतना जानते हैं कि पालकों और शिक्षकों को चाहिए कि वे सीखनेवाले के लिए संशोधन हेतु एक बढ़िया आधार मुहैया करवाएं। उन्हें चाहिए कि वे धीमे, सुस्पष्ट, उतार-चढ़ाव को बढ़ा-चढ़ाकर, छोटे-छोटे, सुगठित कथन दें। इसमें दोहराव होना चाहिए मगर यह सीधी पुनरावृत्ति न हो और इसमें व्याकरण की विविधता होनी चाहिए। जैसे आप बच्चे को कह सकते हैं,"It's breakfast time. Shall we make some toast? You must be hungry. Why do you want to drink? Some orange?" वैसे भी मात्र बोलना महत्त्वपूर्ण नहीं है, बच्चों या सीखनेवालों को यह महसूस भी होना चाहिए कि वे एक वयस्क के साथ एक संयुक्त उद्यम में शामिल हैं।

उदाहरण के लिए, "Shall we go and feed the rabbits now? The rabbits must be getting hungry. They want their dinner, shall we give them some cabbage leaves? They like cabbage leaves, don't they?"

द्वितीय भाषा सीख रहे बड़े बच्चों के साथ संयुक्त उद्यम मुश्किल ज़रूर है मगर नामुमक़िन नहीं है। यह मुमक़िन है, बशर्ते कि आप उन्हें कुछ करने को दें, जैसे, इंग्लैण्ड या अमेरिका का नक़्शा बनाकर उसमें लंदन या न्यूयॉर्क दर्शाने या भारत में दिल्ली और मुंबई को सही जगह पर रखने को कहें।

बच्चे कंप्यूटर्स से भी शुरुआत कर सकते हैं, अंततः उन्हें जिन प्रोग्राम्स से काम करना है उनकी बनिस्बत सरल प्रोग्राम्स से शुरू कर सकते हैं। इंग्लैण्ड में जब हम कंप्यूटर चालू करते हैं तो बूटिंग अप कहते हैं। अमरीकी लोग बूटस्ट्रैपिंग की बात करते हैं। तो बच्चे में बूटस्ट्रैपिंग कैसे काम करेगा? शुरू में बच्चा एक सरल परिकल्पना बनाएगा, कि हर वाक्य डैडी, मम्मी, डैडी गो जैसे शब्दों से शुरू होता है। फिर उसके बाद कार या कप या गर्ल जैसा कोई शब्द आएगा, जैसे डैडी कार, मम्मी कप, डैडी गो। फिर वह शायद यह समझ पाए कि इन उद्गारों में अंतर थे और सोचने लगे कि ऐसा क्यों है और इससे उसकी कही बात पर क्या असर पड़ा। और अंत में वे समझ पाएंगे कि वाक्य अलग-अलग तरह के वैयाकरणिक सम्बंध व्यक्त करते हैं। आम तौर पर हम जानते हैं कि जब बच्चे भाषा के किसी पहलू पर लगे होते हैं, तो वे सुनने की कोशिश करते हैं, इन्तज़ार करते हैं, जोड़-तोड़ करते हैं, और फिर पुष्टि करने के लिए सुनते हैं। यों कहें कि सबसे पहले वे सुनते हैं, बोलने की कोशिश करने से पहले वे अपनी भाषा के बारे में काफ़ी कुछ सीखते हैं। फिर वे आज़माइशी तौर पर प्रयोग करते हैं। (और हां, कभी-कभी द्वितीय भाषा सीखनेवालों को काफ़ी अधिक अंग्रेज़ी सुनने की ज़रूरत पड़ती है, इससे पहले कि वे बोलने को विवश हों।)

भाषा अर्जित करने के बारे में एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि बच्चे और वयस्क सह-घटना (शब्द और संरचनाएं जो एक के बाद एक आती हैं) के प्रति विशेष रूप से सजग होते हैं। इसी ढंग से एक अंधी बच्ची सैली ने look और see के बीच अंतर सीखा था और वह अपनी भाषा में देखनेवाले बच्चों से थोड़ी ही पीछे थी। जैसे "Look, here's how you wind the clock" और "Come and see the kitty." तो ज़ाहिर है कि जो शब्द वह सीख रही थी, उसने उसके दोनों ओर के शब्दों पर ध्यान दिया था। और यह सबसे महत्त्वपूर्ण है कि बच्चे (और द्वितीय भाषा सीखने वाले भी) वास्तव में चीज़ों को संदर्भ में ही सीखते हैं।

अब तक मैंने मुख्य रूप से यह बात की कि बच्चे आगे कैसे बढ़ते हैं, मगर वे अपनी ग़लतियों को पहचानकर पीछे भी चलते हैं। और किसी को पक्का पता नहीं है कि वे ऐसा कैसे करते हैं, सिवाय इसके कि यदि आप उनसे धीमे-धीमे और स्पष्ट रूप में बात करते रहें तो वे पीछे देखते हैं। मैंने खण्ड बारह - रीट्रीटिंग - में कुछ सिद्धांत लिखे हैं और शायद असंगतियों को पकड़ना सबसे महत्त्वपूर्ण होता है। बच्चे देखते हैं कि उनका बोलना पालकों से थोड़ा अलग है और फिर वे बदलाव कर लेते हैं।

मैंने विविधता के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं कहा है। बच्चों का भाषा सीखना कई मायनों में सामान्य रूपरेखा में एक समान है। मगर व्यक्तियों के बीच विविधता तो होती है। कुछ बच्चे शब्दों के बारे में जानना चाहते हैं, कुछ बच्चे संरचनाओं के बारे में जानना चाहते हैं। दूसरा, भाषाओं के बीच विविधता होती है और लगता है कि भाषा के अलग-अलग प्रकार सीखनेवालों में अलग-अलग रणनीतियों को बढ़ावा देते हैं। तीसरा, बेशुमार बच्चे द्विभाषा-भाषी और त्रिभाषा-भाषी बनते हैं। यह किसी भी बच्चे के लिए काफ़ी फ़ायदेमंद होता है। उनके पालक कभी-कभी चिंतित हो जाते हैं क्योंकि शुरू-शुरू में एक भाषा-भाषी परिवार की अपेक्षा ऐसा बच्चा भाषा में धीमे आगे बढ़ता नज़र आता है। मगर यह अस्थायी होता है। अंततः बच्चा दोनों भाषाएं अर्जित कर लेता है, हालांकि इससे कभी-कभी मदद मिलती है यदि एक पालक निरंतर एक ही भाषा बोले। यानी यदि बच्चे को पता हो कि उसकी मां अंग्रेज़ी बोलेगी और पिता स्पैनिश बोलेंगे तो शायद मदद मिलेगी।

बहरहाल, मैं आख़री बात पर आती हूं। मैंने सिर्फ़ भाषा की संरचना पर बात ही की है। मैंने उस आम अंतःक्रिया की बात नहीं की जिसे भी सीखना होता है, जैसा कि निम्न कार्टून ृंखला में दिखता हैः

साफ़ है कि इस बच्चे ने टेलीफोन को संभालना नहीं सीखा है। टेलीफोन बजता है। बच्चा उसे उठाकर कहता है "हैलो"। दूसरे छोर की आवाज़ कहती है "क्या मैं तुम्हारे पिताजी से बात कर सकता हूं", बच्चा कहता है, "ऊंह, मुझसे पूछने की ज़रूरत नहीं है।"

विद्या भवन सोसायटी प्रकाशित **ज्ञान का निर्माण** से साभार। जीन आइचिसन आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में भाषावैज्ञानिक। द्वारा भावानुवाद– सुशील जोशी, एकलव्य की स्रोत फीचर सेवा के संपादक हैं। विज्ञान एवं शिक्षा में निरंतर लेखन करते हैं।